डॉ० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, बिहार-848 125

कृषि विज्ञान केन्द्र
बिरौली, समस्तीपुर

एक नज़र...

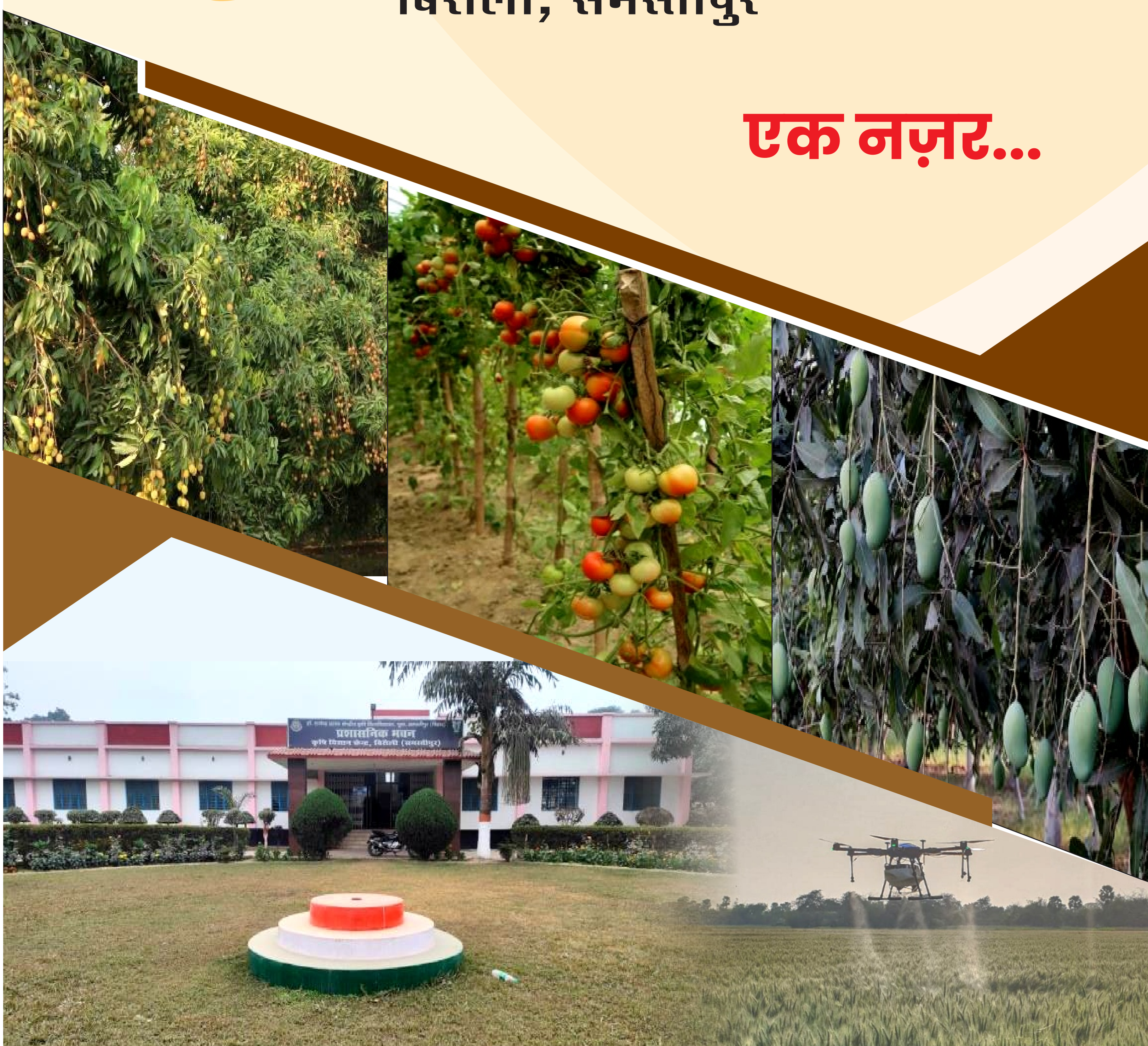

कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली एक नजर

मुख्य संरक्षक

डॉ. पी.एस.पाण्डेय

माननीय कुलपति

डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मुख्य संपादक

डा. रविन्द्र कुमार तिवारी

वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान

कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली

संकलन एवं संपादन

ई. विनिता कश्यप

विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि अभियंत्रण)

श्रीमती भारती उपाध्याय

विषय वस्तु विशेषज्ञ (फसल उत्पादन)

योगदान

श्रीमती वर्षा कुमारी

विषय वस्तु विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)

डा. संचिता घोष

विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान)

श्री सुमित कुमार सिंह

विषय वस्तु विशेषज्ञ (पौध संरक्षण)

सुश्री अभिलिप्सा विश्वाल

विषय वस्तु विशेषज्ञ (मत्स्य विज्ञान)

तकनीकी सहयोग

श्रीमती निशा रानी

कार्यक्रम सहायक (प्रयोगशाला तकनीशियन)

प्रकाशन वर्ष : 2024

कुलपति का संदेश

डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, किसानों के समक्ष आने वाली समस्याओं और चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए कृषि की नवीनतम तकनीकों के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। विश्वविद्यालय किसानों की आय में वृद्धि तथा उनकी जीवनशैली के उच्चतम् स्तर पर ले जाने हेतु दृढ़ संकल्पित है। विश्वविद्यालय अपने अधीन 16 कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से कृषि एवं किसानों के समरत उत्थान हेतु कृषि प्रसार, अनुसंधान एवं प्रबंधन प्रणाली को सुदृढ़ कर रहा है। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा एवं अन्य कृषि संस्थानों द्वारा विकसित कृषि की अत्याधुनिक तकनीकों को किसानों के प्रक्षेत्र पर व्यवहारिक अनुप्रयोग में लाने में कृषि विज्ञान केन्द्र एक महत्वपूर्ण कड़ी है। कृषि विज्ञान के माध्यम से हमारा ध्यान कृषि की टिकाऊ पद्धतियों को बढ़ावा देने, फसल उत्पादकता बढ़ाने, कृषि संबंधी उद्यमशीलता, प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने तथा ग्रामीण विकास पर जोर देना है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली ने पिछले सात वर्षों के दौरान अपने किये गये कार्यों को संकलित किया है। मुझे उम्मीद है कि यह प्रयास निरंतर जारी रहेगा। यह विवरणिका भविष्य की योजना बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। मैं इस विवरणिका को कृषि हित में संकल्पित करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के समस्त कर्मचारियों को शुभकामनाऐं देता हूँ।

(डॉ. पुन्यव्रत सुविमलेन्दु पाण्डेय)

परिचय

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली, समस्तीपुर की स्थापना 10 जुलाई 2004 को राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत् किया गया। समस्तीपुर जिले में चार अनुमंडल समस्तीपुर, पटोरी, रोसड़ा एवं दलसिंहसराय हैं जिसमें कुल 20 प्रखण्ड यथा– पूसा, कल्याणपुर, ताजपुर, मोरवा, समस्तीपुर, वारिसनगर, सरायरंजन, मोहनपुर, खानपुर, पटोरी, दलसिंहसराय, विभुतिपुर, शिवाजीनगर, रोसड़ा, उजियारपुर, विद्यापतिनगर, बिथान, हसनपुर, सिंघिया एवं मोहिउद्दीन नगर हैं। वर्श 2019 तक कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली का कार्यक्षेत्र 20 प्रखंडों में था।

वर्ष 2019 में समस्तीपुर में एक अतिरिक्त कृषि विज्ञान केन्द्र, लादा, सिंघिया में स्थापित किया गया। इसके पश्चात् कृशि विज्ञान केन्द्र, बिरौली का कार्यक्षेत्र समस्तीपुर जिले के दो अनुमंडल यथा– समस्तीपुर एवं पटोरी है। यह केन्द्र 25.41^{0} उत्तरी अक्षांश एवं 84.6 पूर्वी उन्नतांया के बीच समुद्रतल से 52.8 मी. ऊपर अवस्थित है। यह समस्तीपुर एवं मुजफ्फरपुर रोड के बीच जिला मुख्यालय से 15 किलोमीटर एवं विश्वविद्यालय से 8 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है।

केन्द्र के समस्त तकनीकी हस्तान्तरण कार्यक्रम ''करके देखो'' एवं ''देखकर विश्वास करो'' के सिद्धांत पर संचालित किया जाता है तथा प्रौद्योगिकी में निहित वास्तविक दक्षता को सिखाने पर बल दिया जाता है। यह केन्द्र एक ऐसी महत्वाकांक्षी, वैज्ञानिक संस्था है जहां किसानों एवं कृषि कार्यें में संलग्न महिलाओं तथा ग्रामीण युवकों को व्यवसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे स्वांवलम्बी बनने के साथ तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर सकें। प्रशिक्षण मुख्यतः फसलोत्पादन, पौध सुरक्षा, पशु पालन, कृषि अभियंत्रिकी, उद्यानिकी तथा अनेक कृषि संबंधी विषयों में दिया

जाता है। केन्द्र के किसानों के खेतों पर किसानों को शामित करते हुए वैज्ञानिकों की देख–रख में उन्नत तकनीक का परीक्षण किया जाता है तथा कृषकों एवं विस्तार कार्यकत्तओं के समक्ष आधुनिकतम वैज्ञानिक तकनीक का अग्रिम–पंक्ति प्रदर्शन किया जाता है। केन्द्र के द्वारा वर्श 2004–05 से ही धान, गेंहू, अरहर, राई, तिल, मसूर, मोटे अनाज आदि के उच्च गुणवक्तायुक्त बीज का उत्पादन एवं उच्च गुणवक्तायुक्त सब्जियों की पौध तैयार कर किसानों तक पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। केन्द्र के प्रक्षेत्र पर समस्तीपुर जिले के मुख्य फसलों (रबी एवं खरीफ) का फसल संग्रहालय लगाया जा रहा है जिससे केन्द्र पर भ्रमण हेतु आने वाले किसान ''देखकर विश्वास करो'' के सिद्धान्त द्वारा जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। केन्द्र के अन्तर्गत एक नर्सरी की स्थापना भी की गई है जिसमें आम के लगभग सभी प्रजातियाँ (सफेद मालदह, बम्बई, दशहरी, आम्रपाली, मल्लिका, अल्फान्सो, गुलाब खास, सुकूल, जर्दालू, कृष्ण भोग, भरत भोग, अमर इब्राहिम, राजेन्द्र–1, तोतापुरी, टन बथुआ, कंचन बथुआ, सफेद बथुआ, गोपालभोग, पहाड़पुर सिंदुरिया, गुलाबखास, सिपिया, मिठुआ, हिमसागर, प्रभाशंकर, महमूद बहार, सेवरी, जवाहर, स्वर्ण रेखा, काजू, एल. फजली, गरजित), लीची (शाही, चाईना, रोज सेन्टेड, बेदाना), अमरूद (इलाहाबाद सफेदा, एल.–49), नींबू (कागजी नींबू) बिहारका पौधा किसानों के लिए विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित मूल्य में उपलब्ध कराया जाता है।

बिहार

समस्तीपुर

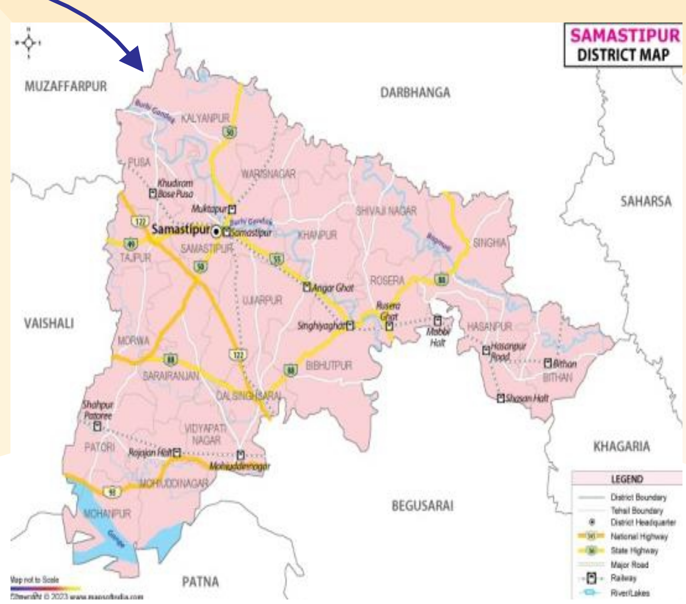

कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियाँ

1. विभिन्न कृषि प्रणालियों के अन्तर्गत किसानों के प्रक्षेत्र पर परीक्षण (ऑन फार्म ट्रायल) द्वारा स्थान विशेष कृषि तकनीकों क पहचान करना।
2. कृषक प्रक्षेत्रों पर तकनीकों की उत्पादन क्षमता के स्थापना/प्रदर्शन हेतु अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण अयोजित करना।
3. किसानों हेतु आधुनिक कृषि तकनीकों के विषय में ज्ञानार्जन एवं कौशल सवंर्द्धन हेतु प्रशिक्षण आयोजित करना।
4. प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए उनके अग्रिम क्षत्रे विशेष में तकनीकी विकास के ज्ञान सवंर्द्धन हेतु प्रशिक्षण आयोजित करना।
5. जिला के कृषि अर्थव्यवस्था के समुन्नयन हेतु सार्वजनिक, निजी तथा स्वयंसेवी क्षेत्रों के लिए संसाधन एवं ज्ञान केन्द्र के रूप में कार्य करना।
6. उन्नतशील बीज, पौध तथा जैविक उत्पादों का उत्पादन कर कृषकों को उपलब्ध कराना।
7. किसानों को विभिन्न विषयों पर सूचना एवं संचार तकनीक (आइ.सी.टी.) और अन्य मीडिया माध्यमों का उपयोग करके कृषि परामर्श प्रदान करना।

प्रक्षेत्र की स्थिति

कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली, समस्तीपुर प्रक्षेत्र एवं आस–पास के क्षेत्र की मिट्‌टी बलुई–दोमट है। इसका पी. एच. मान 8–8.5 के बीच है।

कृषि विज्ञान केन्द्र के अधीन उपलब्ध भूमि

क्र. सं.	इकाई	(हे0)
1	भवन आदि	0.8
2	प्रदर्शन इकाई	2.0
3	फसल	14.5
4	बागवानी	34.2
5	कृषि वानिकी	15.6
6	जल क्षेत्र (गहरा)	8.8
7	तालाब	1.2
8	अन्य (मेड़, सड़क, चैनल)	6.7
	कुल	83.8

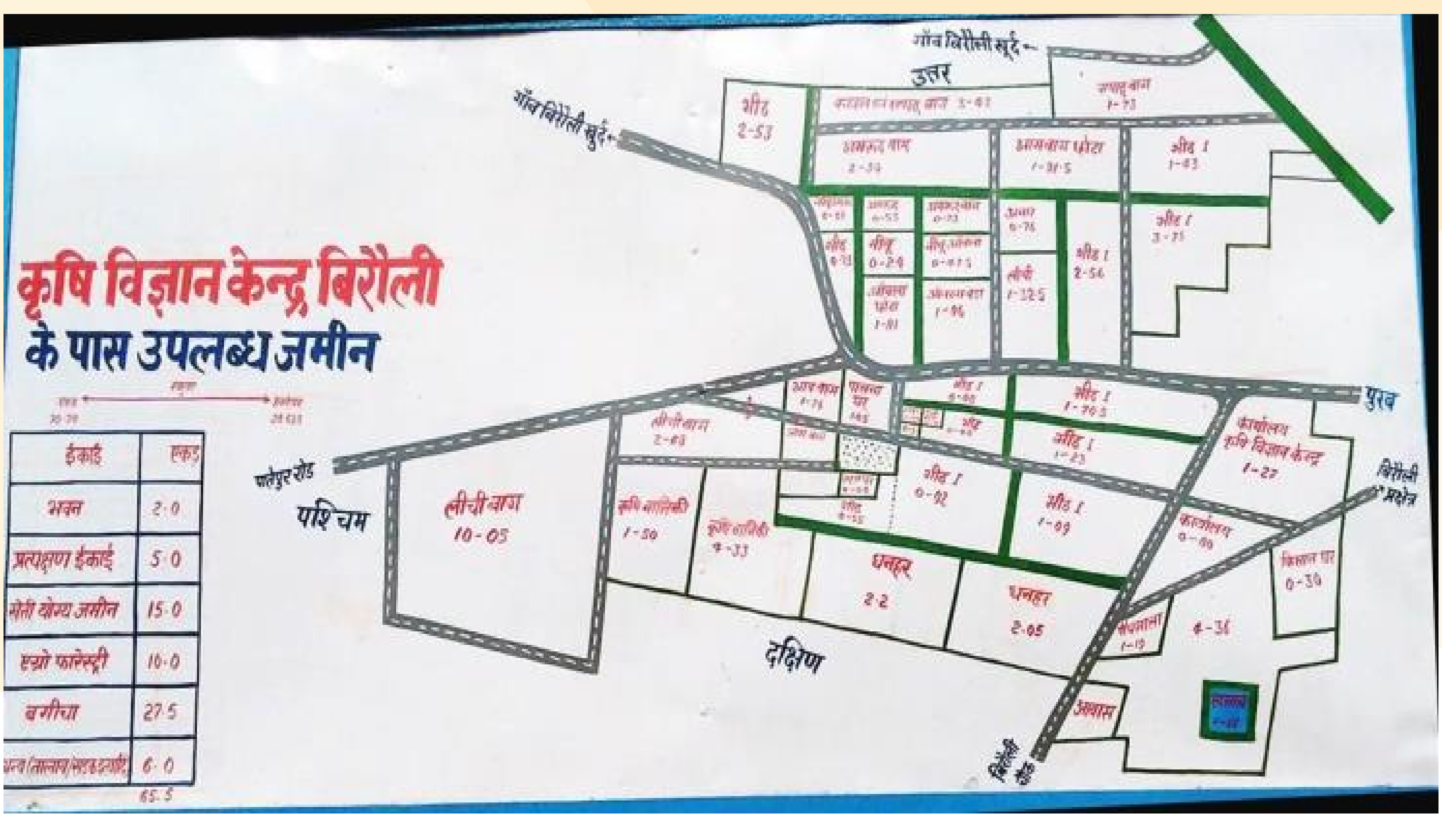

केन्द्र पर उपलब्ध प्रत्यक्षण इकाईयाँ

अजोला इकाई	वर्मीकम्पोस्ट इकाई	मधुमक्खी पालन इकाई
समेकित कृषि प्रणाली	नेट हाउस	मशरूम इकाई
केज कल्चर	कृषि यंत्र बैंक	पौधशाला
पॉली हाउस	पोषण	फसल संग्रहालय

माननीय कुलपति के द्वारा केन्द्र के विभिन्न इकाईयों का परिभ्रमण

डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के माननीय कुलाधिपति का कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के कार्यक्षेत्र पर परिभ्रमण

डा. पी. एल. गौतम, माननीय कुलाधिपति, डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा ने कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली द्वारा संचालित किए जा रहे विभिन्न परियोजनाऐं एवं केन्द्र पर अवस्थित विभिन्न प्रदर्शन इकाईयों का अवलोकन किया। माननीय कुलाधिपति द्वारा जल–जीवन–हरियाली के अन्तर्गत बिहार सरकार के द्वारा वित्तपोशित जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम जो कि समस्तीपुर जिले के 05 विभिन्न चयनित गाँवों में चलाया जा रहा है, का अवलोकन एवं किसानों के साथ वार्तालाप किया गया। इसके उपरान्त अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत कल्याणपुर गौड़ा, पूसा में केन्द्र द्वारा प्रत्यक्षण किये गये बैकयार्ड मुर्गी पालन पर प्रक्षेत्र दिवस में प्रतिभाग एवं लाभान्वित किसानों के साथ मुर्गी पालन से होने वाले उनके आर्थिक विकास पर चर्चा किये। इसके साथ ही, कृषि विज्ञान केन्द्र के विभिन्न कर्मियों के साथ उनके द्वारा किये जाने वाले कार्यों एवं विभिन्न समस्याओं पर चर्चा किये।

प्रशिक्षण कार्यक्रम (2016-2023)

कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के द्वारा कृषि से संबंधित उन्नत तकनीकी की जानकारी हेतु कृषकों नवयुवकों/नवयुवतियों एवं कृषि प्रसार कर्मीयों के लिए वर्ष 2016–17 से 2022–23 तक विभिन्न विषयों पर कुल 1131 प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिससे 31614 प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षित हुए। कृषकों की आय बढ़ाने एवं रोजगार सृजन हेतु बकरी पालन, मत्स्य पालन, नर्सरी उत्पादन, समेकित कृषि प्रणाली, कृषि यंत्र बैंक की स्थापना एवं संचालन पोषण वाटिका इत्यादि विषय पर प्रशिक्षण कराया गया, कुल 3194 प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षित हुए जिसमें से लगभग 563 प्रशिक्षणार्थीयों ने विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार शुरू किया।

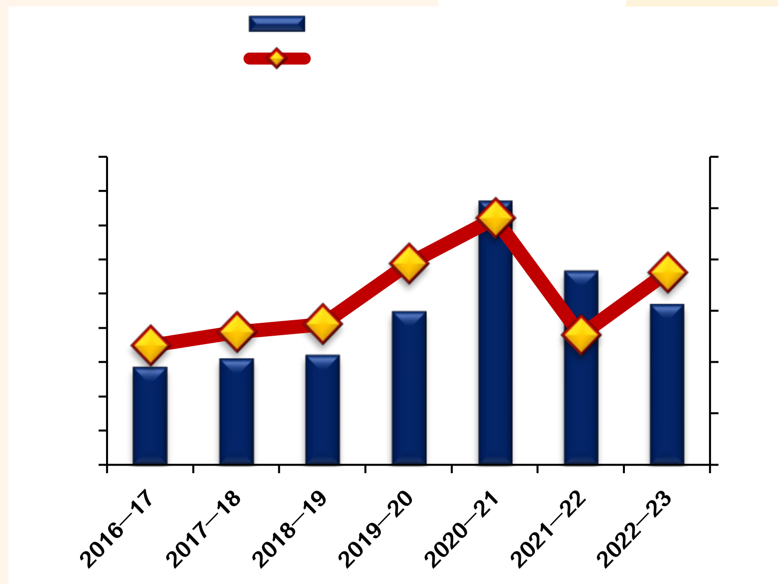

प्रक्षेत्र पर परीक्षण कार्यक्रम (2016-2023)

प्रक्षेत्र पर परीक्षण कार्यक्रम कृषि विज्ञान केन्द्र का एक महत्वपूर्ण गतिविधियाँ है जिसके द्वारा तकनीकी मूल्यांकन किसानों के खेत पर किया जाता है। प्रक्षेत्र पर परीक्षण करने से पहले आमतौर पर निम्नलिखित चरणों का पालन किया जाता है:

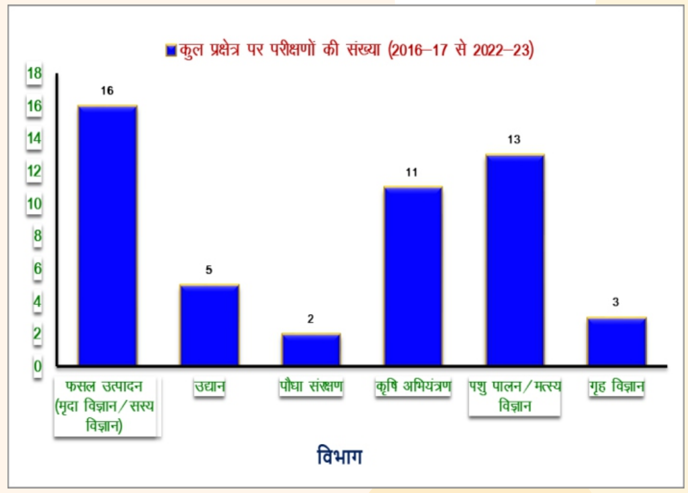

- समस्या की पहचान
- वर्तमान परिस्थिति
- समस्या विशलेषण
- निदान/परिशोधन
- प्रयोग
- परिणाम का मूल्यांकन
- किसानों को प्रौद्योगिकी का सूझाव एवं प्रसार

कृषि के क्षेत्र में विभिन्न फसलों के लिए काफी नवीनतम् तकनीक विकसित किये गये हैं। समस्तीपुर जिले की मुख्य फसल प्रणाली एवं फसल में आने वाली मुख्य समस्या की पहचान कर उसके निदान हेतु विकसित नवीनतम् तकनीकों का चयन करके कृषकों के प्रक्षेत्र में केन्द्र के द्वारा विभिन्न परीक्षण कार्यक्रम किये गये हैं

ताकि किसानों को होने वाली समस्या का समाधान किया जाए। वर्श 2016–17 से 2022–2कृशि कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली द्वारा कुल 50 प्रक्षेत्र पर परीक्षण किये गये हैं।

अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण (2016-2023)

कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के द्वारा 2016–17 से 2022–23 तक कुल 31 तकनीकों का अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण कुल 837 किसानों के बीच में किया गया जिनमें से कुछ प्रत्यक्षण का विवरण निम्नलिखित है:

मडुआ (पौष्टिक अनाज) प्रभेद–आर.ए.यू–8 का प्रत्यक्षण

केले में स्कैरिंग बीटल की रोकथाम हेतु घोढ़ आवरण का प्रत्यक्षण

पंक्तिबद्ध सब्जियों में निकाई गुड़ाई हेतु ग्रबर का प्रत्यक्षण

आम एवं लीची में फल मक्खी फंदा का प्रत्यक्षण

समग्र मछली पालन एवं रोग निदान का प्रत्यक्षण

ग्लैडियोलस फूल का प्रत्यक्षण

सामूहिक अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण (दलहन/ तेलहन) 2016-2022

सामूहिक अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण (दलहन/ तेलहन) वर्ष 2015–16 से राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (NFSM) के अधीनस्थ कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के वित्तीय सहयोग के द्वारा चलाया जा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य खाद्य सुरक्षा के लिए दलहन/तेलहन उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के लिए किसानों को प्रोत्साहित करना। सामूहिक अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण (दलहन/तेलहन) पिछले 10 वर्षों के दौरान दलहन/तेलहन उत्पादन के लिए नवीनतम किस्म/प्रौद्योगिकियों का प्रत्यक्षण चयनित किसानों के क्षेत्र में किया जाता है।

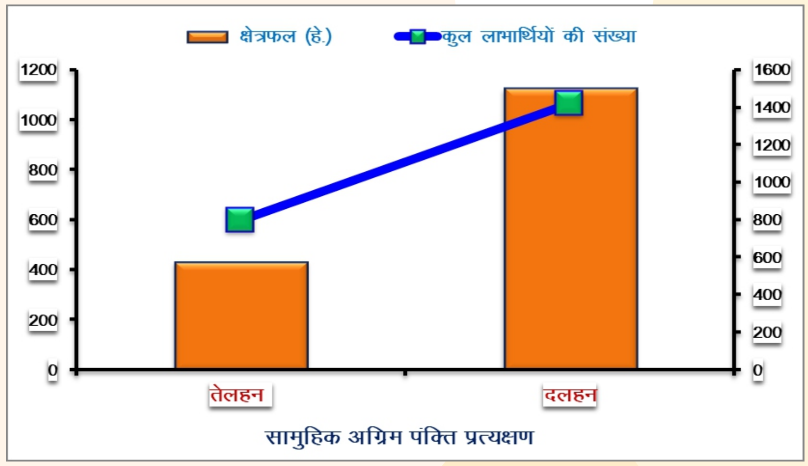

पौधशाला

कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के द्वारा लीची एवं आम के विभिन्न प्रभेदों का गुणवक्तायुक्त पौध का विस्तार बिहार के सभी जिलों के साथ–साथ अन्य राज्यों में किया गया है। कृषि विज्ञान केन्द्र, कटनी, मध्य प्रदेश में 100 लीची के पौधा, इंस्टीट्यूट फॉर सस्टेनेबल लाइवलीहुड्स एंड डेवलपमेंट (BISLD), झारखंड में 4752 लीची के पौधा, पूणे महाराष्ट्र में 150 शाही लीची के पौधा, काजरी, जोधपुर में लीची (शाही एवं चाइना) एवं उद्यान विभाग, आनन्द कृषि विश्वविद्यालय, गुजरात में आम के पौधे (बम्बई एवं सफेद मालदह), कृषि विभाग, बलिया, उत्तर प्रदेश में आम एवं शाही लीची की आपूर्ति की गई।

बीज उत्पादन कार्यक्रम

उत्पादन वर्ष	कुल बीज उत्पादन (क्विंटल)
2015-16	112.6
2016-17	187.90
2017-18	110.00
2018-19	194.60
2019-20	328.5
2020-21	402.54
2021-22	465.89
2022-23	401.87

चक्रीय खाता विवरणी

वित्तीय वर्ष	31 मार्च तक शेष जमा राशि (लाख में)
2016-17	32,31,616.00
2017-18	16,40,567.00
2018-19	11,71,613.00
2019-20	14,16,534.00
2020-21	18,19,388.00
2021-22	28,94,476.00
2022-23	40,39,244.77
2023-24	71,00,704.77

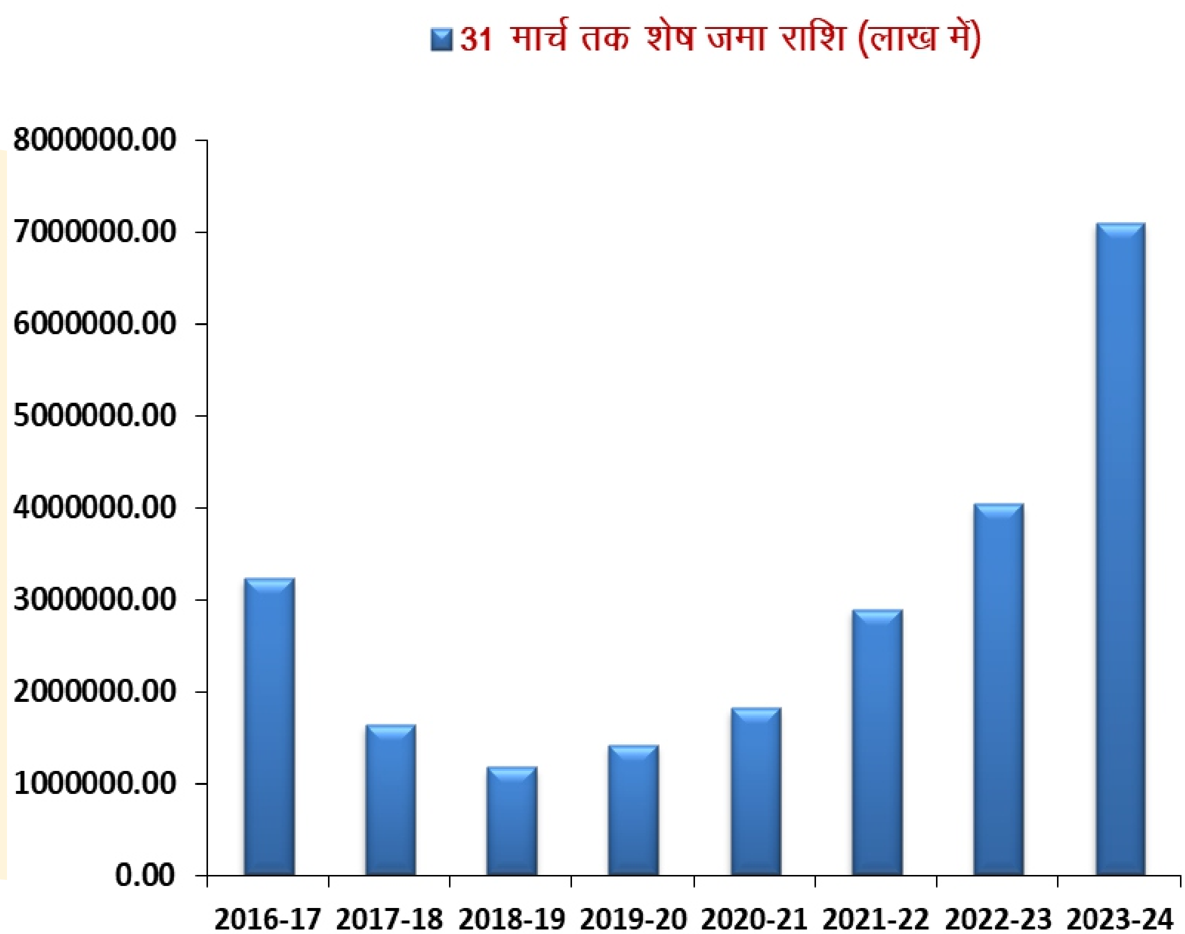

केन्द्र के द्वारा संचालित परियोजनाएँ

जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम

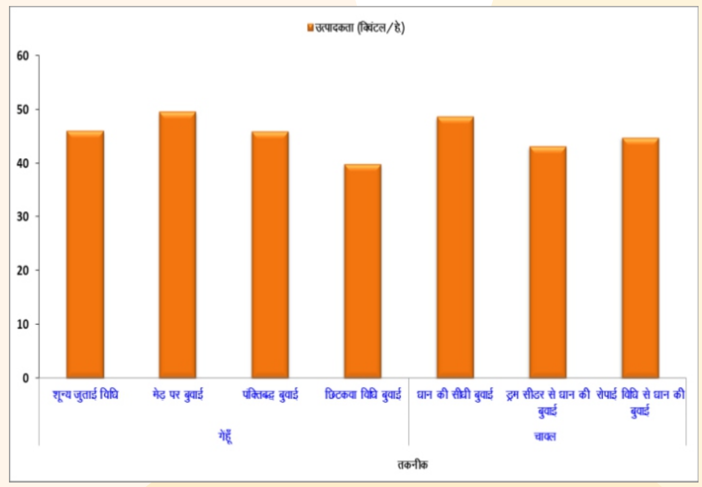

कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के द्वारा जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम के अन्तर्गत 5 गांवों का चयन किया गया क्रमशः रामापुर महेशपुर, चाको भिण्डी, हरपुर भिण्डी, चकपहाड़ एवं रामपुर है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत किसानों को मौसम के अनुकूल खेती करना सिखाया जाता है ताकि मौसम के बदलते परिवेश में किसानों के लागत में कमी के साथ–साथ बदलते मौसम से होने वाली हानि से बचाया जा सके। साथ ही साथ समय के अनुसार खेती की जा सके। इस कार्यक्रम में विभिन्न उन्नत उपकरण जैस लेजर लैंड लेवलर से जमीन का समतलीकरण, जीरो टिलेज से गेहूँ, मसूर एवं राई की बुवाई, रेजड बेड पलांटर द्वारा मक्के की बुवाई, ड्रीम सीडर द्वारा धान की सीधी बुवाई, हैपी सीडर द्वारा गेहूँ की बुवाई, पोटैटो पलांटर द्वारा आलू की बुवाई, पोटैटो डीगर द्वारा आलू की खुदाई, मल्टी क्रॉपथ्रेसर, रीपर कम बाइंडर आदि म" ीनों का प्रत्यक्षण किसानों के खेत में कराया जा रहा है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत चयनित गांव में खरीफ में कुल 595 एकड़ एवं रबी में 623 एकड़ क्षेत्रफल में परियोजना चलाया जा रहा है।

जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न संसाधन संरक्षित तकनीकों का प्रभाव

1. लेजर लैंड लेवलर:

इस परियोजना के अनतर्गत कुमल 187 एकड़ क्षेत्रफल में लेजर लैंड लेवलर द्वारा जमीन की समतलीकरण करायी गयी है। इसका प्रभाव काफी सकारात्मक देखा गया है। चावल–गेहूँ कृषि प्रणाली के खेतों में लेजर लेवलिंग से सिंचाई का समय 46–52 घंटे/हेक्टेयर/सीजन से कम हो कर लगभग 30–32 घंटे/हेक्टेयर/सीजन हो

गया, जिससे सिंचाई में लगभग रू. 1600.00 से रू. 2000.00 तक की बचत हुई है और पारंपरिक रूप से समतल किए गए खेतों की तुलना में उपज में लगभग 6–7 प्रतिशत का सुधार हुआ। गेहूं में, सिंचाई का समय 31–32 घंटे/हेक्टेयर/सीजन से कम हो कर 18–20 घंटे/हेक्टेयऱ/सीजन हो गया जिससे सिंचाई में रू. 1200.00 से रू. 1300.00 तक की बचत हुई है और लेजर लेवल खेतों में उपज 7–9 प्रतिशत तक बढ़ गई। पानी की बचत 25–27 प्रतिशत तक देखी गयी है।

2. शून्य जुताई:

जीरो टिलेज विधि द्वारा गेंहूँ की बुवाई में लगभग रू. 9000/हेक्टर की दर से जुताई में बचत देखी गई है। फसल अवशेष की उपस्थिति में गेंहू की बुवाई से मृदा में नमी की मात्रा बनी रहती है जिससे किसानों की एक सिंचाई की बचत हो जाती है। इस तकनीक से उत्पादन में 10.9 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है, पछुआ हवा से होने वाली फसलों में होने वाली नुकसान से भी बचत होती है।

अनुसूचित जाति उपयोजना

भारत सरकार ने अनुसूचित जाति समुदाय को उनके विकासात्मक आकांक्षा कार्यक्रम में सुविधा प्रदान करने के लिए सामाजिक समानता की मांग, विशेष ध्यान और सावधानीपूर्वक हस्तक्षेप के सिद्धांत पर अनुसूचित जाति उप योजना शुरू की, जो समुदाय को आपूर्ति द्वारा समर्थित सहानुभूति और संवेदनशीलता दोनों में विकसित करने में सक्षम बनाने पर केंद्रित है, पर्याप्त संसाधन। अनुसूचित जाति उपयोजना विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से अनुसूचित जाति आबादी को सशक्त

बनाने की एक योजना है।

केन्द्र के द्वारा अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत चयनित किसानों को विभिन्न उपादानों जैसे– पॉलट्री, फीडर, फीड, एवं ड्रींकर स्प्रेयर, सिलाई मशीन, मधुमक्खी बक्शा, नर्सरी कीट, मशरूम, बायो फोर्टिफाईड ओकरा एवं अन्य छोटे उपकरण रोजगार के लिए दिये गये हैं। जिनमें से कई लाभार्थी स्वयं का रोजगार मुर्गी पालन, सिलाई भी शुरू किये हैं। अब तक कुल 385 किसान विभिन्न उपादानों के द्वारा लाभान्वित हुए है। इस उपयोजना के अन्तर्गत अनुसूचित जाति वर्ग के किसानों के लिए प्रशिक्षण, जागरूकता कार्यक्रम एवं उपादान वितरण कार्यक्रम किया जाता है।

केन्द्र के द्वारा की गयी मृदा जाँच कार्यक्रम

समस्तीपुर जिले के विभिन्न गांवों के किसानों के बीच मृदा स्वास्थ्य जागरूकता एवं फसल कटाई के तुरंत बाद मृदा परीक्षण कार्यक्रम वर्श 2016–अब तक कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली द्वारा किया गया जिसमें विभिन्न प्रखंडों के खेतों से कुल 5151 मृदा नमूना की जांच की गई।

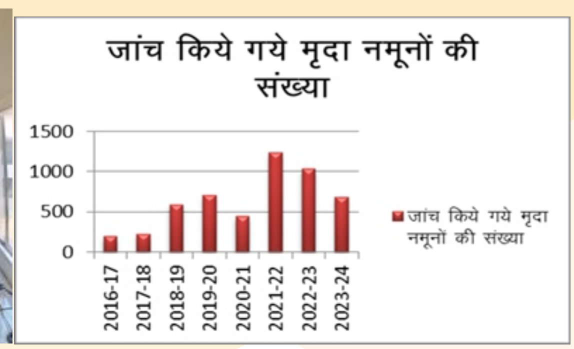

स्वच्छता की सेवा

भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी के द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत मिशन का आरंभ किया गया था। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा कुल स्कूल के छात्रों के बीच स्वच्छता ही सेवा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

पोषक संवेदी कृषि एवं नवोन्मेशण कार्यक्रम (NARI परियोजना)

नारी परियोजना वर्ष 2021 के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा संचालित किया गया है। इस योजना के अन्तर्गत ग्रामीण महिलाओं तथा आंगनवाड़ी केन्द्र के माध्यम से पोशण सुरक्षा हेतु जागरूकता कार्यक्रम चलाया जा रहा है जिसमें कृशि विज्ञान केन्द्र, बिरौली द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा कृषक महिलओं के प्रक्षेत्र पर प्रत्यक्षण तथा विभिन्न प्रकार के उन्नत प्रभेद की सब्जी बीज कीट तथा सब्जी पौधा तथा फल पौधा आदि सामाग्री वितरण द्वारा लाभ पहुंचाया जा रहा है। ये कार्यक्रम के तहत 13 पोषण संवेदी गांवों को चूना गया है।

प्राकृतिक खेती

प्राकृतिक खेती परियोजना वर्ष 2021 से चलाया जा रहा है। प्राकृतिक खेती कृषि की प्राचीन पद्धति है जिसमें रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों को प्रयोग नहीं होता है अपितु प्राकृति में आसानी से उपलब्ध होने वाले प्राकृतिक तत्व तथा जीवाणुओं के उपयोग से खेती की जाती है जो फसलों की लागत को कम करने में कारगर हैं। इस खेती में जीवामृत, घनजीवामृत एवं बीजामृत का उपयोग पौधों को पोषक तत्व प्रदान करने के लिए किया जाता है।

कृषि ड्रोन द्वारा फसलों पर छिड़काव

कृषि ड्रोन के द्वारा किसानों के प्रक्षेत्र में वर्ष 2023–24 में कुल 90 हेक्टेयर क्षेत्रफल में छिड़काव का कार्य किया जा चूका है। कृषि ड्रोन के प्रति कृषकों में जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया है।

विभिन्न तकनीकों के विस्तार हेतु गैर सरकारी संस्थाओं के साथ कार्य

मित्रा फाउण्डेशन के साथ केन्द्र का समझौता ज्ञापन वर्ष 2019 में विश्वविद्यालय के सहमति से किया गया। इसके अन्तर्गत 1200 अग्रणी किसानों को प्रति वर्ष प्रशिक्षण, प्रत्यक्षण एवं विभिन्न प्रसार गतिविधियों के द्वारा तकनीकी सहायता दी गयी। 3 वर्षों में कुल 4000 से भी अधिक किसान लाभान्वित हुए।

इसके अतिरिक्त आगा खाँ ग्राम समर्थन कार्यक्रम (भारत), सहगल फाउण्डेशन, इफिकौर आदि गैर सरकारी संस्था के साथ भी जिले के विभिन्न प्रखण्डों के किसानों के साथ तकनीकी सहायता प्रदान करने का कार्य कर रही है।

प्रसार गतिविधियाँ

पुरस्कार एवं सम्मान

प्रकाशन

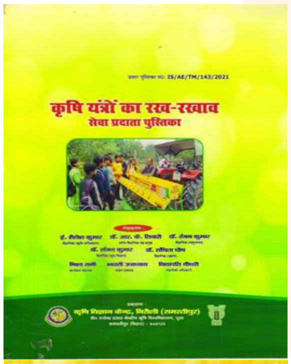

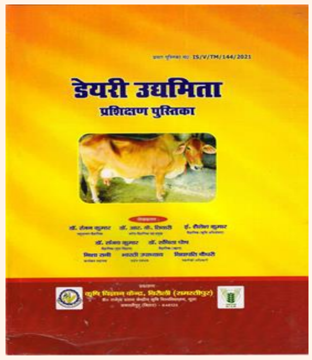

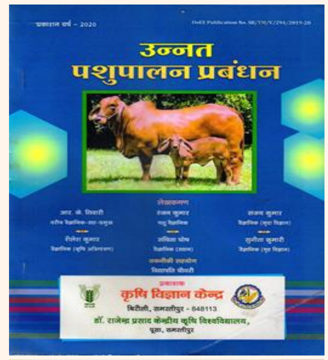

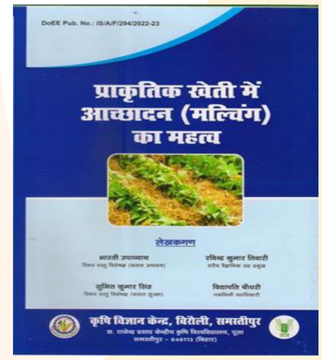

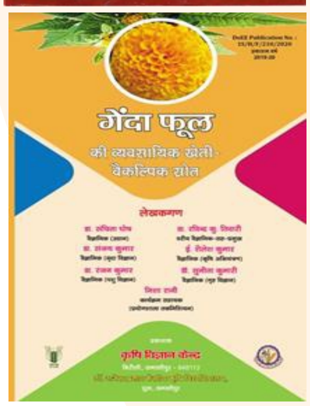

समाचार पत्रों के नजर में

दैनिक भास्कर 2023-06-14 समस्तीपुर भास्कर (2)

जलवायु अनुकूल खेती कर किसान कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं : डॉ. तिवारी

समस्तीपुर भास्कर 11-10-2023

चावल विकास निदेशालय के निदेशक ने सोयाबीन की खेती का किया निरीक्षण

मत्स्य बीज का संवर्धन जरूरी : अभिलिप्सा

समस्तीपुर भास्कर 22-05-2022

बेहतर और अच्छी खेती के लिए जमीन का समतल होना अति आवश्यक : डॉ. तिवारी

कर्मशाला सह प्रशिक्षण शिविर का किया गया आयोजन

वैज्ञानिक पद्धति से रबी की खेती करें किसान, अच्छी होगी आमदनी

दैनिक भास्कर 2023-03-14 समस्तीपुर भास्कर (2)

ग्रीष्मकालीन मूंग की बुआई मार्च के अंत तक हर हाल में करें किसान : डॉ. रविंद्र

इंटीग्रेटेड फिश फार्मिंग किसानों के लिए वरदान

दोगुनी आय लेने के लिए किसान उद्यानिक फसल लगायें : वैज्ञानिक

समस्तीपुर भास्कर 21-04-2022

मधुमक्खी के एक बक्से से निकाल सकते हैं 40 से 50 किलो शहद

कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

समस्तीपुर भास्कर 17-04-2024

रीपर कंबाइंडर बड़े किसानों के साथ छोटे किसानों के लिए भी है उपयोगी

ट्रैक्टर चालित रीपर कम बाइंडर मशीन से फसल की कटाई की दी जानकारी

बिरौली के बीज उत्पादन कार्यक्रम का भ्रमण

दैनिक भास्कर 2024-02 समस्तीपुर भास्कर

व्यावसायिक फूलों की खेती से चमकेगी सूबे के

उत्पादकों की किस्मत, ग्लैडियोलस की डिमांड